

# Absolute Truth

## Know God Know Truth

Monthly Newsletter of ISKCON Delhi-NCR



## News

### 🌳 Felicitation of Doctors (1st July 2021) (ISKCON Dwarka)

Doctor's Day was celebrated by ISKCON Dwarka by honoring them for their selfless duty and conviction to serve and save mankind. All doctors serving at ISKCON COVID center were felicitated by the Temple President, H.G. Pradyumna Priya Prabhu. Special maha-arati was performed at the temple for their well-being. This whole felicitation was done to show respect and to express gratitude to them for their contribution to the society.

### 🌳 A trip to Remember-IYF Vrindavan Yatra (3rd-4th July) (ISKCON, Punjabi Bagh)

Youth Forum organized a 2-day youth camp in Vrindavan which was attended by over 70 boys. It was an exciting and enthralling experience for the boys, many of whom were in Vrindavan for the first time. The program included attending mangal arati, Yamuna bath, visiting temples and hearing Srimad-Bhagavatam. Everyone relished the experience of dhama darshan in the association of devotees and are excited to have more such nourishing trips in future.

### 🌳 Six-day sessions on 'Discover Yourself' (4th-9th July) (ISKCON Namahatta, East of Kailash)

After the huge success of Bhagavad-Gita in 18 days, Namahatta Delhi organised a six-day series on 'Discover your Permanent Happiness'. Based on the popular format of sessions on topic such as 'Who is God?' and "Why bad things happen to good people?", these were organised online. More than 200 people registered for this series. Some were those who had become inspired by the Bhagavad-Gita sessions. Some new people, especially youngsters joined this series. The special feature of these sessions were the interactions, coupled with fun-filled quizzes on virtual format, which enthused participants. Spiritual gifts were given away to winners of the quiz, which was announced every day. Many participants



## समाचार

### 🌳 डॉक्टरों का सम्मान (1 जुलाई 2021) (इस्कॉन द्वारका)

मानव जाति की सेवा और सुरक्षा करने हेतु उनके निस्वार्थ कर्तव्य परायणता और दृढ़ विश्वास के लिए उन्हें सम्मानित करके डॉक्टर दिवस मनाया गया। इस्कॉन कोविड केंद्र में सेवारत सभी डॉक्टरों को मंदिर अध्यक्ष श्रीमान प्रद्युम्न प्रिया प्रभु द्वारा सम्मानित किया गया। सबकी कुशलता हेतु मंदिर में विशेष महाआरती की गई। यह पूरा कार्यक्रम उनके प्रति सम्मान प्रदर्शित करने तथा सभी भक्त उनके प्रति कितने आभारी हैं और ये दर्शाने हेतु किया गया था कि पूरे समाज को स्वस्थ और सुरक्षित बनाये रखने को वे क्या- क्या करते हैं।

### 🌳 आईवाईएफ वृंदावन की एक अविस्मरणीय यात्रा (3-4 जुलाई) (इस्कॉन, पंजाबी बाग)

इस्कॉन युवा मंच ने वृंदावन में दो दिवसीय युवा शिविर का आयोजन किया जिसमें 70 से अधिक बालकों ने भाग लिया। जिनमें से कई पहली बार वृंदावन आए थे, उन बालकों हेतु यह एक उत्तेजक और रोमांचकारी अनुभव था। कार्यक्रम में मंगल आरती, यमुना स्नान, मंदिरों में दर्शन और श्रीमद्भागवत का श्रवण शामिल था। सभी ने भक्तों की संगति में धाम दर्शन के अनुभव का आनंद लिया और भविष्य में इस प्रकार की और भी तुष्टिकारक यात्राओं हेतु उत्साहित अनुभव किया।

### 🌳 "स्वयं की खोज" पर छह दिवसीय सत्र (4-9 जुलाई) (इस्कॉन नमहट्टा, ईस्ट ऑफ कैलाश)

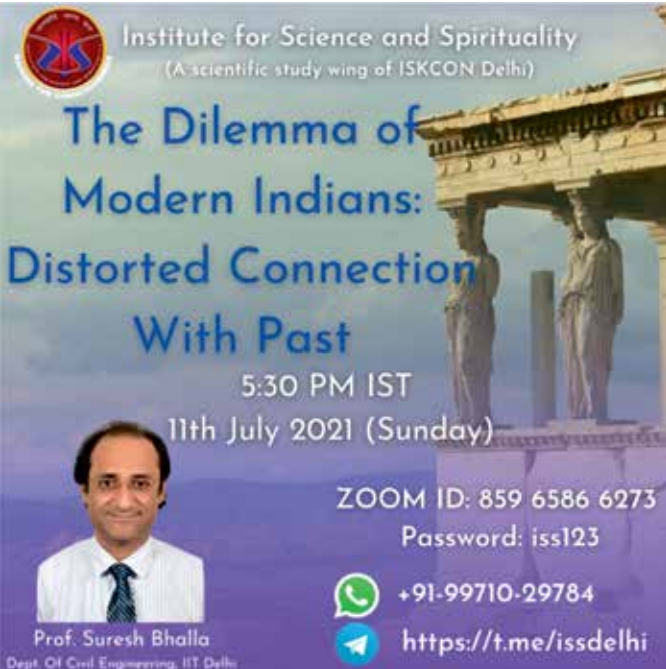
18 दिवसीय भगवद-गीता की अपार सफलता के बाद, नामहट्टा दिल्ली ने 'अपने स्थायी आनंद की खोज करें' पर छह दिवसीय श्रृंखला का आयोजन किया। 'भगवान कौन हैं?' और 'इच्छे लोगों के साथ बुरा क्यों होता है?' जैसे विषयों पर सत्रों के लोकप्रिय प्रारूप के आधार पर, ये ऑनलाइन आयोजित किए गए थे। इस सीरीज हेतु 200 से अधिक लोगों ने रजिस्ट्रेशन कराया। कुछ ऐसे थे जो भगवद-गीता सत्रों से प्रेरित हुए थे। कुछ नए लोग, विशेषतः युवा वर्ग इन सत्रों में शामिल हुए। इन सत्रों का विशेष आकर्षण आभासीय पटल पर मनोरंजक प्रश्नोत्तरी के साथ-साथ चर्चा थी, जिसने प्रतिभागियों को उत्साहित किया। प्रश्नोत्तरी के विजेताओं को कुछ अद्भुत आध्यात्मिक उपहार दिए गए, जिनकी घोषणा

couldn't stop raving about the deep, spiritual content, the Vedic insights and the modern age relevance of the principles discussed. What people found most attractive was the lively presentations and the insightful question and answers sessions that followed each of them. "No wonder, these sessions are called 'life changing'." says, a participant, "they've transformed my thought process in a positive way by educating me in Vedic philosophy and its application."

## **Scientific Lecture Series (4th July)** (Institute for Science and Spirituality (ISS), East of Kailash)

In the last week of June, initiated a two session lecture series by Mr. Siddharth Chhabra who is currently serving as a researcher at Vedic preservation initiative, Michigan. The first lecture entitled "Puranic chronology and modern science" took place on 27/06/21 wherein a comparison was drawn between the puranic time line and the modern scientific chronology. The second lecture entitled "Evidences of reincarnation and near-death incidents: Western vs Vedic Science" on 04/07/2021 covered the case studies of reincarnation from both western as well as Vedic point of view. The next session lecture was delivered by Prof. Suresh Bhalla on 11/07/2021. The lecture entitled "Dilemma of Modern Indians: Distorted Connection with past" comprised of the confused state of mind of the modern Indian generation wherein they find it difficult to connect with their rich tradition and culture. Thereafter on 18/07/2021 the session entitled "Interpreting rules of ethical reasoning from Bhagavad-Gita" was taken up by Mr. Vinay Kumar, Senior Scientist DSIR, New Delhi. His talk was about an attempt to interpret different ethical valuation approaches from the perspective of Bhagavad-Gita. In addition to this the sessions on the course 'Art and Science of Practicing Spirituality (ASPS)' are being conducted weekly for the different groups.

Meanwhile the IIT Delhi chapter of ISS is regularly conducting Bhagavad-Gita online classes in Science, Spirituality and Sustainability group on Facebook every



Institute for Science and Spirituality  
(A scientific study wing of ISKCON Delhi)

## The Dilemma of Modern Indians: Distorted Connection With Past

5:30 PM IST  
11th July 2021 (Sunday)

ZOOM ID: 859 6586 6273  
Password: iss123

+91-99710-29784  
<https://t.me/issdelhi>

Prof. Suresh Bhalla  
Dept. Of Civil Engineering, IIT Delhi

प्रतिदिन की गई थीं। कुछ प्रतिभागी गहरी, आध्यात्मिक सामग्री, वैदिक अंतर्दृष्टि और चर्चा किए गए सिद्धांतों की आधुनिक युग में व्यावहारिकता के विषय में अपनी उन्नता को रोक नहीं पा रहे थे। लोगों को जो सबसे आकर्षक लगा, वह थी जीवंत प्रस्तुतियाँ और उनमें से प्रत्येक का अनुसरण करने वाले व्यावहारिक प्रश्न और उत्तर के सत्र। इकोई आश्चर्य नहीं, इन सत्रों को 'जीवन परिवर्तनीय' कहा जाता है। एक प्रतिभागी कहते हैं, इन्होंने मुझे वैदिक दर्शन और इसके अनुप्रयोग में शिक्षित करके मेरी विचार प्रक्रिया को सकारात्मक विधि से परिवर्तित कर दिया है।

## **वैज्ञानिक व्याख्यान श्रृंखला (4 जुलाई)** (आध्यात्मिकता एवं विज्ञान संस्थान (आईएसएस), ईस्ट ऑफ कैलाश)

जून के अंतिम सप्ताह में, श्री सिद्धार्थ छाबड़ा द्वारा दो सत्रों की व्याख्यान श्रृंखला आरम्भ की गई, जो वर्तमान में वैदिक संरक्षण पहल, मिशिगन में एक शोधकर्ता के रूप में कार्यरत हैं। र्पौराणिक कालक्रम और आधुनिक विज्ञान नामक शीर्षक पर प्रथम व्याख्यान 27/06/21 को हुआ जिसमें पौराणिक कालक्रम तथा आधुनिक वैज्ञानिक समयावधि के मध्य तुलना की गई थी। 04/07/21 को र्पुनर्जन्म और सन्निकट-मृत्यु की घटनाओं के साक्ष्य: पश्चिमी बनाम वैदिक विज्ञान नामक दूसरे व्याख्यान में पश्चिमी तथा वैदिक दोनों दृष्टिकोणों से पुनर्जन्म विषयक अध्ययन को शामिल किया गया। अगले सत्र का व्याख्यान प्रो. सुरेश भल्ला द्वारा 11/07/21 को दिया गया। र्आधुनिक भारतीयों की दुविधा: अतीत के साथ विकृत संबंध शीर्षक वाले व्याख्यान में आधुनिक भारतीय पीढ़ी के दिमाग की भ्रमित अवस्था शामिल थी जिसमें उन्हें अपनी समृद्ध परंपरा और संस्कृति से जुड़ना कठिन अनुभव होता है। तत्पश्चात 18/07/2021 को श्री विनय कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक डीएसआईआर, नई दिल्ली द्वारा र्भगवद-गीता से नैतिक तर्क के नियमों की व्याख्या नामक सत्र पर व्याख्यान दिया गया। उनका व्याख्यान भगवद-गीता के दृष्टिकोण से विभिन्न नैतिक मूल्यांकन के दृष्टिकोणों की व्याख्या करने के प्रयास के विषय में था। इसके अतिरिक्त विभिन्न समूहों हेतु, 'आध्यात्मिक अभ्यास की कला एवं विज्ञान (एसपीएस)' पाठ्यक्रम पर साप्ताहिक रूप से सत्र आयोजित किए जा रहे हैं।

इस मध्य आई एस एस का आई आई टी दिल्ली विभाग नियमित रूप से अपने सदस्यों के लाभ हेतु प्रति शुक्रवार संध्या फेसबुक पर विज्ञान, आध्यात्मिकता और स्थिरता समूह में भगवद-गीता पर ऑनलाइन कक्षाएं आयोजित कर रहा है। समूह के सदस्यों की संख्या लगभग 250 है। विगत सप्ताह, श्लोक 18.17 में समूह के सदस्यों के मध्य बिना उसमें उलझे कार्य सम्पादित करने की विधियों पर चर्चा की गई।

## **धरती माता की देखभाल - मूल्य शिक्षा ओलंपियाड 2021** (जुलाई 2021) (इस्कॉन, पंजाबी बाग)

पिछले कई वर्षों से अपने प्रयासों को सुचारु रखते हुए, इस्कॉन पंजाबी बाग, गोवर्धन इकोविलेज, संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम और फेथ फॉर अर्थ काउंसिलर के सहयोग से इस बार मूल्य शिक्षा ओलंपियाड 2021 (वीईओ 2021) का आयोजन कर रहा है। हम पिछले कई वर्षों से इस ओलंपियाड का आयोजन कर रहे हैं और हमें अद्भुत सफलता मिली है। पिछले साल COVID चुनौतियों के उपरान्त भी, मूल्य शिक्षा ओलंपियाड में भारत भर के 28+ विद्यालयों के 13,200+ बच्चों ने भाग लिया। इस वर्ष हमारा लक्ष्य और अधिक छात्रों तक पहुंचना है। इस वर्ष मूल्य शिक्षा ओलंपियाड के प्रमुख केंद्रित लक्ष्यों में से एक जलवायु परिवर्तन पर छात्रों को संवेदनशील बनाना और शिक्षा देना रहेगा। पर्यावरण के प्रति जागरूक रहना समय की मांग है, क्योंकि जलवायु परिवर्तन इस पीढ़ी के लिए निर्णायक चुनौती होगी। 15 जुलाई, 2021 को औपचारिक रूप

Friday evening for the benefit of its members. The membership of the group is about 250 in number. In the by gone week, verse 18.17 dealing with the ways of performing work without getting entangled into them were discussed amongst the group members.

## **Caring for Mother Earth - Value Education Olympiad 2021 (July 2021)** (ISKCON, Punjabi Bagh)

Continuing with its efforts over last several years, ISKCON Punjabi Bagh is organizing VALUE EDUCATION OLYMPIAD 2021 (VEO 2021), this time in collaboration with Govardhan Ecovillage, UN Environment Program and Faith for Earth Councilor. We have been organizing this Olympiad over last several years now and has received tremendous success. Despite the COVID challenges last year, the Value Education Olympiad saw a participation of 13,200+ children from 28+ schools across India. This year we aim to reach out to even more students. One of the major focuses of the Value Education Olympiad this year will be on sensitizing and education students on climate change. Being conscious of the environment is the need of the hour, as climate change will be the defining challenge for this generation. VEO 2021 has been formally launched on 15th July, 2021. As part of this program, we will be conducting 9 (nine) seminars for the children, to discuss the values covered under Value Education Olympiad 2021, including the principles and wisdom from Bhagavad-Gita. These seminars will be conducted on every Sunday starting 1st August 2021 and ending on 26th September 2021, with the last 2 sessions being workshops.

### **The topics will be:**

- Inner climate change to outer climate change - Importance of Value education in fighting climate change - By Gauranga Das (Director, Govardhan Ecovillage) on 1st Aug 2021
- Honesty
- Integrity
- Trustworthiness
- Equity
- Justice
- Altruism

The dates for the 7 sessions will be 1st Aug, 8th Aug, 15th Aug, 22nd Aug, 29th Aug, 5th Sep and 12th Sep. The timings for the sessions will be 2-3.30 pm.

## **Ecstatic Kirtan by H.G. Madhava Prabhu (8th July)** (ISKCON, Dwarka)

The devotees felt especially blessed when H.G. Madhava Prabhu graced the temple and enthralled everyone with his soulful kirtan. The kirtan filled the heart of devotees with enthusiasm and enlivened them in this ongoing pandemic.

## **Disappearance of Srila Bhaktivinoda Thakura (9th July)** (ISKCON, East of Kailash)

The disappearance day of Srila Thakura Bhaktivinoda was celebrated with pushpanjali, kirtan and glorification.

से VEO 2021 का विमोचन किया गया। इस कार्यक्रम के भाग के रूप में, हम बच्चों के लिए 9 (नौ) विभिन्न संगोष्ठी सत्र आयोजित करेंगे, जिसमें मूल्य शिक्षा ओलंपियाड 2021 के अन्तर्गत शामिल मूल्यों पर वार्ता की जाएगी, जिसमें भगवद - गीता के सिद्धांत और ज्ञान शामिल हैं। ये सेमिनार 1 अगस्त 2021 से प्रत्येक रविवार को आरम्भ होकर 26 सितंबर 2021 को समापन तक आयोजित होंगे जिसमें अंतिम 2 सत्र कार्यशालाएं होंगी।

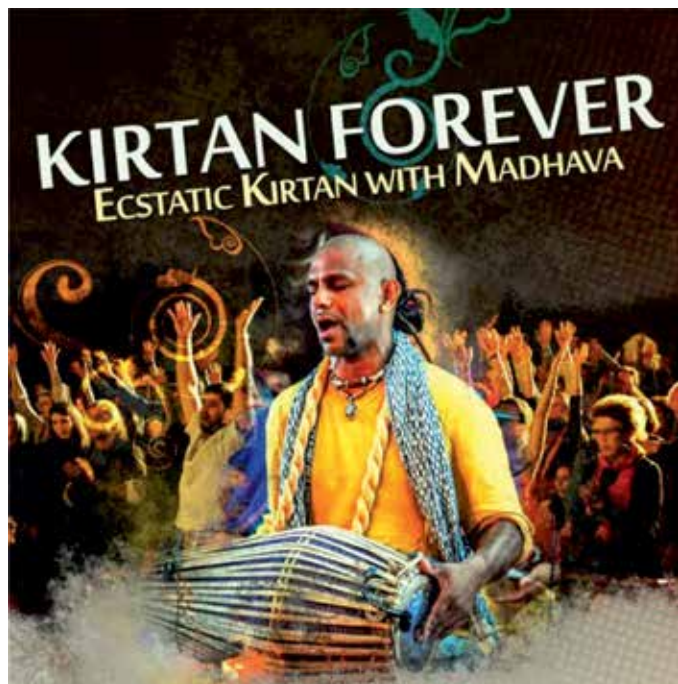
### **विषय होंगे:**

- बाहरी जलवायु परिवर्तन हेतु आंतरिक वातावरण परिवर्तन - जलवायु परिवर्तन से लड़ने में मूल्य शिक्षा का महत्व - गौरंग दास (निदेशक, गोवर्धन इकोविलेज) द्वारा 1 अगस्त 2021 को
- सत्यनिष्ठा
- निष्कपटता
- विश्वसनीयता
- निष्पक्षता
- न्यायसम्मतता
- परोपकारिता

7 सत्रों की तिथियां 1 अगस्त, 8 अगस्त, 15 अगस्त, 22 अगस्त, 29 अगस्त, 5 सितंबर और 12 सितंबर होंगी। सत्रों का समय दोपहर 2 - 3:30 बजे होगा।

## **श्रीमान माधव प्रभु द्वारा उन्नत कर देने वाला उत्साही कीर्तन (8 जुलाई)** (इस्कॉन, द्वारका)

जब श्रीमान माधव प्रभु द्वारा मंदिर आगमन के साथ ही भक्तों ने स्वयं को विशेष रूप से धन्य अनुभव किया और अपने भावपूर्ण कीर्तन से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। कीर्तन ने भक्तों के हृदय को उमंग से भर दिया और इस चल रही महामारी में उन्हें जीवंत कर दिया।



## **श्रील भक्तिविनोद ठाकुर का तिरोभाव दिवस (9- जुलाई)** (इस्कॉन, ईस्ट ऑफ कैलाश)

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर का तिरोभाव दिवस पुष्पांजलि, कीर्तन एवं उनके गुणानुवादन के साथ मनाया गया। वे दिग्गज आचार्य, जिन्होंने आधुनिक समय में उपयोगरत भगवद प्रचार ( उपदेश ) पद्धतियों की नींव रखी, वे एक सम्मानित एवं विद्वानों तथा भक्ति मार्ग गामीयों द्वारा अनुसरण

The stalwart acharya, who laid the foundation of modern-day preaching methodologies, is a personality, revered and followed by erudite scholars and those who pursue the path of bhakti. His presence can be charted in the form of innumerable bhajans, literature and instructions, he left. All these are well entrenched in devotional principles, serving as guidelines for devotees from all across the globe. The 'seventh Goswami' was remembered on his disappearance day. Devotees prayed to him for his mercy so that his teachings can be followed and his association through his vani, can be made good use of.

## Festival of Gratitude (10th July) (ISKCON, Dwarka)

The devotees of Youth Forum organized a very special event "Festival of Gratitude" for honouring all the senior leaders and devotees of IYF Dwarka. These leaders have played an immense role in guiding many youths in Dwarka and other place on the path of Krishna consciousness. Contemplation on these aspects led to a sense of deep gratitude and veneration among these youths. They tried to express their gratitude and love for leaders by organizing this festival. The festival involved kirtan, prasadam and the glorification of devotees.

**FESTIVAL OF GRATITUDE**  
By IYF Dwarka

  
AC Bhaktivedanta Swami Prabhupada  
Founder Acharya of ISKCON

 10 July 2021, Saturday



- Guru Puja : 7:30 AM
- Breakfast : 9:30 AM
- Kirtan Mela : 10 AM - 1 PM
- Special Lecture : 1 PM - 2:30 PM
- Lunch : 2:30 PM - 3:30 PM
- Birthday Celebration : 3:30 PM
- Glorification : 4 PM
- Dinner : 8 PM

**VENUE**  
Temple Hall  
Guru Puja  
Kirtan Mela  
CBSM First Floor  
All the activities except  
Guru Puja & Kirtan Mela

Plot No.-4, Sub-City Level, Behind Radisson Blu Hotel,  
Sector 13, Dwarka, New Delhi, Delhi 110078

For Any Query Contact Shivam Prabhu: +91-8368097632

## Gundica Marjan (11th July) (ISKCON, All Delhi-NCR Temples)

The annual festival of cleaning of the temple is called Gundica Marjan. Celebrated to commemorate Mahaprabhu's pastime of cleaning the temple of Gundica at Puri, just before the Ratha Yatra, is replete with many

क्रिये जाने वाले व्यक्तित्व हैं। उनकी उपस्थिति असंख्य भजनों, साहित्य और निर्देशों जो वे छोड़ गए हैं, के रूप में दर्ज की जा सकती है। ये सभी भक्ति एवं सिद्धांतों से परिपूर्ण हैं, जो दुनिया भर के भक्तों हेतु दिशा-निर्देश के रूप में कार्यरत हैं। 'सप्तम गोस्वामी' के तिरोभाव दिवस पर उनका स्मरण किया गया। भक्तों ने उनसे उनकी दया दृष्टि हेतु कृपा की याचना की जिससे उनकी शिक्षाओं का पालन किया जा सके और उनकी वाणी के माध्यम से उनकी संगति का सदुपयोग किया जा सके।



## आभार उत्सव (10 जुलाई) (इस्कॉन, द्वारका)

इस्कॉन युवा मंच के भक्तों ने आईवाईएफ द्वारका के सभी वरिष्ठ नेतृत्व और भक्तों को सम्मानित एवं कृतज्ञता ज्ञापित करने हेतु एक बहुत ही विशेष कार्यक्रम रआभार उत्सव का आयोजन किया। इन नेताओं ने द्वारका और अन्य जगहों पर कई युवाओं को कृष्ण भावनामृत के मार्ग पर मार्गदर्शन करने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। इस पक्ष पर चिंतन से इन युवाओं में गहन श्रद्धा एवं कृतज्ञता की भावना जन्म लेगी। उन्होंने इस उत्सव का आयोजन कर भक्तों और नेतृत्व के प्रति आभार और प्रेम व्यक्त करने का प्रयास किया है। इस उत्सव में कीर्तन, प्रसादम और भक्तों का महिमा मंडन शामिल था।

## गुंडिचा मार्जन (11 जुलाई) (इस्कॉन, दिल्ली-एनसीआर के सभी मंदिर)

मंदिर की सफाई के वार्षिक उत्सव को गुंडिचा मार्जन कहा जाता है। रथ यात्रा से ठीक पहले, महाप्रभु द्वारा पुरी में गुंडिचा मंदिर मार्जन की लीला का उत्सव मनाया जाता है, जो कई महत्वपूर्ण शिक्षाओं से परिपूर्ण है। मंदिर मार्जन असल में अपने हृदय जो अनर्थों से भरा हुआ है, के मार्जन का ही एक कार्य है। यह हमें एक सेवक की अपनी संवैधानिक स्थिति को आत्मसात करना तथा उत्तम भाव एवं उत्कृष्ट मनोवृत्ति के साथ सेवा प्रदान करना सिखाता है। इस प्रकार सेवा करते हुए, हम सही मूल्यों को विकसित करते हैं जिसके परिणामस्वरूप आध्यात्मिक पथ पर हमारी प्रगति होगी। भक्तगण मंदिर में सभी ओर कौने कौने तक साफ करने के लिए एकत्र हुए। उच्च स्वर में कीर्तन, सत्संग तथा प्रभु को प्रसन्न करने की इच्छा ने इस दिवस को भगवान् की सेवा दिवस के रूप में उजागर किया।



important lessons. The cleaning of the temple is an act of cleansing one's heart which is filled with anarthas. It teaches us to take to our constitutional position of a servant and offer service in perfect mood and attitude. While serving thus, we inculcate the right values which will result in our progress on the spiritual path. Devotees assembled at the temple to scrub and clean every nook and corner. The loud kirtan, the association and the desire to please the Lord, highlighted this day of rendering service to Their Lordships.

## **Ratha Yatra (12th July)** (ISKCON, East of Kailash and Dwarka)

Jagannatha or The Lord of the Universe, along with His siblings, brother Baladeva and sister Subhadra, come out of the sanctum sanctorum, to shower Their mercy. In all Their glory, seated on chariots, They saunter in the lanes of Puri. This festival of international acclaim is celebrated all around the world, by the causeless mercy of one of the greatest saints of Modern Age, His Divine Grace A.C Bhaktivedanta Swami Prabhupada. His purpose of taking it to the West and to the whole world thereafter, was to allow people of Kaliyuga, unfortunate and dull-headed as they are, to receive mercy of the Supreme Personality of Godhead. Every year, the Ratha Yatra is organised with great devotional fervour. This year, like the last one, the COVID restrictions and protocols, disallowed its celebration with usual fanfare. However, this could not dampen the spirits of the devotees, who are always determined to use every opportunity to partake of the divine shelter of the Lord. A small procession with the deities in the foreground and sankirtan in the background, was organised on the campus. By being welcomed at the various parts of the campus, devotees enjoyed the favour of the Lord, through the service they rendered and the offerings they made. Visitors to the temple were spellbound by the pulsating kirtan spreading the potency of the Mahamantra in all directions. Dancing and singing devotees, pulling the ropes of the small chariot, eager to serve their beloved Jagannatha left many gaping at this unprecedented enthusiasm. Although low-key, the celebration was a divine experience for all those who participated.

## **Offering 180 Aartis to Lord Jagannatha** (IGF, ISKCON East of Kailash)

The Girls' Forum offered 180 aartis to the Lord. Dressed and smiling, the devotees performed this service to please the Lord and gain His favour. The enthusiasm of these young devotees under the guidance of Her Grace Urmila Mataji, was exemplary and added colour, light and festive mood to the grand celebration.

## **Kirtan in the Honor of H.G. Aindra Prabhu (16th July)** (ISKCON, Rohini)

Although it has been quite a long time when legendary 24hr kirtan leader H.G. Aindra Prabhu has left all of us yet his presence can be felt even today through his kirtan styles. H.G. Madhava Prabhu (Mauritius) who had learnt kirtan under Aindra Prabhu's direction visited the temple along with his wife H.G. Radhika Mataji. Radhika Mataji to give the morning Srimad-Bhagavatam class. She spoke on the

## **रथ यात्रा (12 जुलाई)** (इस्कॉन, ईस्ट ऑफ कलाश और द्वारका)

जगत के नाथ भगवान् जगन्नाथ, अपने भाई बलदेव और बहन सुभद्रा के साथ, गर्भगृह से अपनी दया की वर्षा करने हेतु बाहर आते हैं। वे अपनी सम्पूर्ण भव्यता के साथ, रथों में विराजमान होकर पुरी की सड़कों पर निकलते हैं। आधुनिक युग के महानतम संतों में से एक, श्री कृष्ण कृपा मूर्ति ए.सी. भक्तिवेदांत स्वामी श्रील प्रभुपाद की अकारण दया से, अंतर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि प्राप्त यह उत्सव संसार भर में मनाया जाता है। इसे पश्चिम और तदोपरांत सारे संसार में ले जाने का उनका उद्देश्य, कलियुग के दुर्भाग्यपूर्ण और मंदबुद्धि लोगों को, परम भगवान की दया प्राप्त करवाना था। प्रतिवर्ष, रथ यात्रा का आयोजन बड़े उत्साह एवं भक्ति के साथ किया जाता है। पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी, कोविड प्रतिबंध और प्रोटोकॉल ने इस उत्सव को विशेष धूमधाम से नहीं मनाने दिया। यद्यपि, यह भक्तों के भाव और उत्साह को कम नहीं कर सका, जो सदा भगवान के दिव्य आश्रय में भाग लेने हेतु हर उपलब्ध अवसर का उपयोग करने के लिए दृढ़ संकल्पित रहते हैं। आगे आगे श्री भगवान् के विग्रह और पृष्ठभूमि में संकीर्तन के साथ एक छोटी रथयात्रा मंदिर परिसर में ही आयोजित की गई। परिसर के विभिन्न भागों में भगवान् का स्वागत किया गया, भक्तों ने अपनी सेवा और अपने बनाये प्रसाद आदि चढ़ावों के माध्यम से भगवान की कृपा प्राप्त कर आनंद का अनुभव किया। सभी दिशाओं से महामंत्र की शक्ति का प्रसार करते हुए कीर्तन सुनकर मंदिर में आगतुक श्रद्धालु मंत्रमुग्ध हो गए। अपने प्रिय जगन्नाथ की सेवा हेतु आतुर छोटे रथ की रस्सियों को खींचकर नाचते-गाते भक्तों ने अपने अभूतपूर्व उत्साह से अपने पीछे कई अविस्मरणीय स्मृतियों को छोड़ा है। यद्यपि आकार में छोटे किन्तु अति महत्त्व के इस उत्सव का उन सभी के लिए एक दिव्य अनुभव था जिन्होंने इसमें भाग लिया था।



## **भगवान जगन्नाथ को 180 आरती अर्पित करना** (आईजीएफ, इस्कॉन ईस्ट ऑफ कैलाश)

इस्कॉन बालिका मंच ने भगवान को 180 आरतीयां अर्पित कीं। रंग बिरंगे परिधानों से सुसज्जित और प्रसन्नचित्त भक्तों ने भगवान को प्रसन्न करने हेतु यह सेवा की तथा उनकी कृपा प्राप्त की। श्रीमती उर्मिला माताजी के मार्गदर्शन में इन युवा भक्तियों का उत्साह अनुकरणीय था और उन्होंने भव्य उत्सव में रंग, प्रकाश और उमंग के भाव को जोड़ा।

## **श्रीपाद ऐंद्र प्रभु के सम्मान में कीर्तन (16 जुलाई)** (इस्कॉन, रोहिणी)

यद्यपि 24 घंटे कीर्तन के महान सम्राट श्रीपाद ऐंद्र प्रभु को गए हुए बहुत समय हो गया है, फिर भी उनकी उपस्थिति को आज भी उनकी कीर्तन शैलियों के माध्यम से अनुभव किया जा सकता है। श्रीमान माधव प्रभु (मॉरीशस)

glories of the Holy name. After the morning prasadam, H.G. Madhava Prabhu started leading the kirtan in the temple hall in a presence of around 100+ devotees. The devotees drowned themselves in the mellows of the holy name. At last, H.G. Keshav Murari Prabhu expressed his gratitude on behalf of all present and invited them for the opening of the temple next year.

## **First month of Caturmasya (24th July)**

Caturmasya is the time for abstinence with the purpose of making more time for spiritual pursuits. The first month of Caturmasya, began from 24th July. Devotees abstain from eating green, leafy vegetables, such as cabbage and spinach, during this month.

## **Disappearance day of Srila Sanatana Goswami (24th July) (ISKCON, East of Kailash)**

Chaitanya Mahaprabhu instructed Srila Sanatana Goswami to establish temples in Vrindavana and preach Vaishnavism. One of the six Goswamis, Srila Sanatana Goswami gave up a prestigious official position to follow the path of bhakti. His service attitude and surrender to the words of Mahaprabhu are instructive and exemplary. Spearheading the works of the six Goswamis, Srila Sanatana Goswami's contribution to explication of principles of devotional service is punctuated with works like the Hari Bhakti Vilasa and Brhad Bhagavatamrta. His disappearance day was celebrated with pushpanjali, kirtan and glorification.



## **Disappearance day of Srila Gopala Bhatta Goswami (28th July) (ISKCON, East of Kailash)**

The appearance and disappearance of a Vaishnava, are both moments of celebration. They appear to benefit other living entities, giving them directions and instructions to perfect their lives. When they leave, they return back to their eternal service, leaving a trail that devotees may follow in their footsteps. Srila Gopala Bhatta Goswami is one such Vaishnava. Serving in the direct instructions of Chaitanya Mahaprabhu, he travelled to Vrindavana, to assist Srila Rupa and Srila Sanatana Goswami. This disappearance was celebrated with pushpanjali, kirtan, glorification and bhajans.

जिन्होंने ऐंद्र प्रभु के निर्देशन में कीर्तन सीखा था, अपनी पत्नी श्रीमती राधिका माताजी के साथ मंदिर पधारे थे। राधिका माताजी ने सुबह श्रीमद-भागवतम पर प्रवचन दिया। उन्होंने पवित्र हरिनाम की महिमा पर वार्ता की। सुबह प्रसादम के उपरान्त, श्रीमान माधव प्रभु ने लगभग सौ से अधिक भक्तों की उपस्थिति में मंदिर हॉल में कीर्तन का नेतृत्व प्रारम्भ किया। भक्तों ने स्वयं को पवित्र हरिनाम के मधुर संकीर्तन में डुबो लिया। अंत में, मंदिराध्यक्ष श्रीमान केशव मुरारी प्रभु ने सभी उपस्थित जनों की ओर से आभार व्यक्त किया और उन्हें अगले वर्ष मंदिर के उद्घाटन समारोह के लिए आमंत्रित किया।



## **चतुर्मास का प्रथम महीना (24 जुलाई)**

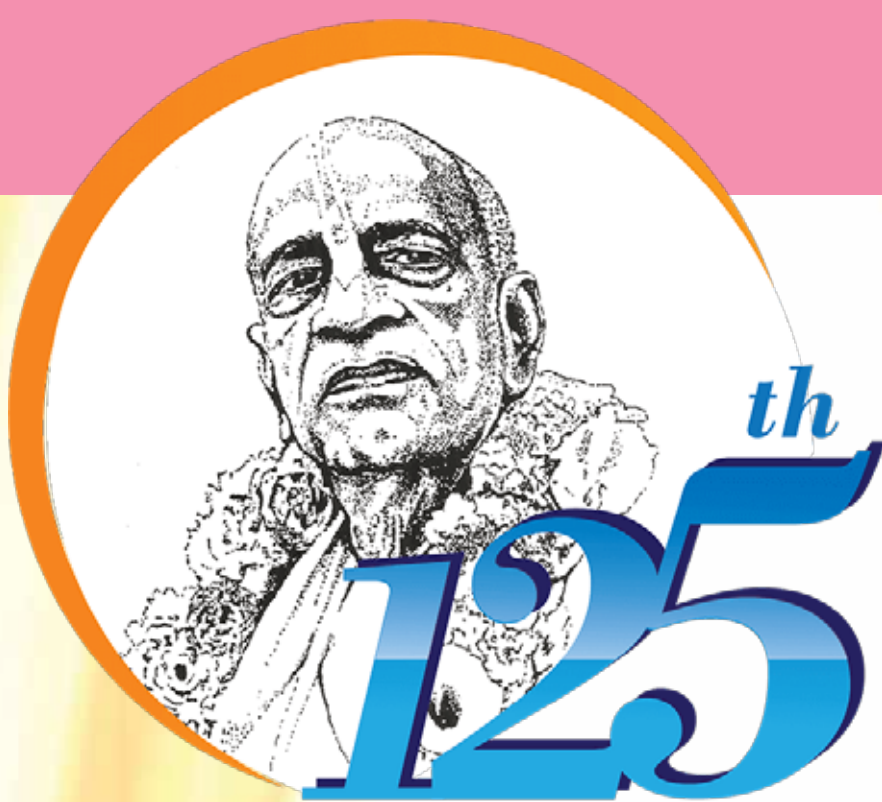
आध्यात्मिक गतिविधियों हेतु अधिक समय देने के उद्देश्य से चतुर्मास अति संयमन का समय है। चतुर्मास का पहला महीना 24 जुलाई से आरम्भ हुआ। इस महीने में भक्त हरी पत्तेदार सब्जियां जैसे पत्ता गोभी और पालक आदि खाने से निग्रह करते हैं।

## **श्रील सनातन गोस्वामी का तिरोभाव दिवस (24 जुलाई) (इस्कॉन, ईस्ट ऑफ कैलाश)**

चैतन्य महाप्रभु ने श्रील सनातन गोस्वामी को वृंदावन में मंदिर स्थापित करने तथा वैष्णव परंपरा का प्रचार करने का निर्देश दिया था। छह गोस्वामीयों में से एक, श्रील सनातन गोस्वामी ने भक्ति के मार्ग का अनुसरण करने हेतु एक प्रतिष्ठित आधिकारिक पद त्याग दिया था। उनका सेवा भाव और महाप्रभु के वचनों के प्रति समर्पण शिक्षाप्रद और अनुकरणीय है। छह गोस्वामीयों के कार्यों की अगुवाई करते हुए, श्रील सनातन गोस्वामी पाद के भक्ति एवं सेवा के सिद्धांतों की व्याख्या में योगदान हरि भक्ति विलास तथा और बृहद भागवतामृत जैसे ग्रंथों के रूप में अंकित है। उनका तिरोभाव दिवस पुष्पांजलि, कीर्तन और उनके गुणानुवर्णनों के साथ मनाया गया।

## **श्रील गोपाल भट्ट गोस्वामी का तिरोभाव दिवस (28 जुलाई) (इस्कॉन, ईस्ट ऑफ कैलाश)**

वैष्णव का आविर्भाव और तिरोभाव, दोनों ही उत्सव के क्षण हैं। वे अन्य जीवों को लाभान्वित करने हेतु प्रकट होते हैं, तथा उन्हें उनके जीवन को परिपूर्ण करने हेतु निर्देशित एवं मार्गदर्शित करते हैं। जब वे भौतिक शरीर त्यागते हैं, तो वे अपनी शाश्वत सेवा में वापस लौट जाते हैं, एक ऐसा मार्ग छोड़कर जिस पर भक्तगण उनके मार्ग का अनुसरण कर सकते हैं। श्रील गोपाल भट्ट गोस्वामी ऐसे ही एक वैष्णव हैं। चैतन्य महाप्रभु के सीधे निर्देशन में सेवा करते हुए, उन्होंने श्रील रूप और श्रील सनातन गोस्वामी की सहायता हेतु वृंदावन की यात्रा की। इनका तिरोभाव पुष्पांजलि, कीर्तन, महिमामंडन एवं भजनों के साथ मनाया गया।



# SRILA PRABHUPADA

## BIRTH ANNIVERSARY

— 1896-2021 —

### **"YOUR ORIGINAL CONSCIOUSNESS IS KRISHNAA CONSCIOUSNESS"**

*The following interview with freelance reporter Sandy Nixon took place in July 1975, in Śrīla Prabhupāda's quarters at the Kṛṣṇa center in Philadelphia. We are presenting excerpts from this interview.*

Ms. Nixon: My first question is very basic. What is Kṛṣṇa consciousness?

Śrīla Prabhupāda: Kṛṣṇa means God. We are all intimately connected with Him because He is our original father. But we have forgotten this connection. When we become interested in knowing, "What is my connection with God? What is the aim of life?" then we are called Kṛṣṇa conscious.

Ms. Nixon: How does Kṛṣṇa consciousness develop in the practitioner?

Śrīla Prabhupāda: Kṛṣṇa consciousness is already there in the core of everyone's heart. But because of our materially conditioned life, we have

forgotten it. The process of chanting the Hare Kṛṣṇa mahā-mantra—Hare

Kṛṣṇa, Hare Kṛṣṇa, Kṛṣṇa Kṛṣṇa, Hare Hare/ Hare Rāma, Hare Rāma, Rāma Rāma, Hare Hare—revives the Kṛṣṇa consciousness we already have. For example, a few months ago these American and European boys and girls did not know about Kṛṣṇa, but just yesterday we saw how they were chanting Hare Kṛṣṇa and dancing in ecstasy throughout the whole Rathayātrā procession [an annual festival sponsored by the Kṛṣṇa consciousness movement in cities around the world]. Do you think that was artificial? No. Artificially, nobody can chant and dance for hours together. They have actually awakened their Kṛṣṇa consciousness by following a bona fide process. Kṛṣṇa consciousness is dormant in everyone's heart, and when one comes in contact with devotees, it is awakened. Kṛṣṇa consciousness is not artificial. Just as a young boy awakens his natural attraction for a young girl in her association, similarly, if one hears about Kṛṣṇa in the association of devotees, he awakens his dormant Kṛṣṇa consciousness.

Ms. Nixon: What is the difference between Kṛṣṇa consciousness and Christ consciousness?

Śrīla Prabhupāda: Christ consciousness is also Kṛṣṇa consciousness, but because at present people do not follow the rules and regulations of Christianity—the commandments of Jesus Christ—they do not come to the standard of God consciousness.

Ms. Nixon: What is unique about Kṛṣṇa consciousness among all religions?



**Śrīla Prabhupāda:** Primarily, religion means to know God and to love Him. That is religion. Nowadays, because of a lack of training, nobody knows God, what to speak of loving Him. People are satisfied simply going to church and praying, "O God, give us our daily bread." In the Śrīmad-Bhāgavatam this is called a cheating religion, because the aim is not to know and love God but to gain some personal profit. In other words, if I profess to follow some religion but I do not know who God is or how to love Him, I am practicing a cheating religion. As far as the Christian religion is concerned, ample opportunity is given to understand God, but no one is taking it. For example, the Bible contains the commandment "Thou shall not kill," but Christians have built the world's best slaughterhouses. How can they become God conscious if they disobey the commandments of Lord Jesus Christ? And this is going on not just in the Christian religion, but in every religion. The title "Hindu," "Muslim," or "Christian" is simply a rubber stamp. None of them knows who God is and how to love Him.

**Ms. Nixon:** How can one tell a bona fide spiritual master from a fake?

**Śrīla Prabhupāda:** Whoever teaches how to know God and how to love Him—he is a spiritual master. Sometimes bogus rascals mislead people. "I am God," they claim, and people who do not know what God is believe them. You must be a serious student to understand who God is and how to love Him. Otherwise, you will simply waste your time. So the difference between others and us is that we are the only movement that can actually teach one how to know God and how to love Him. We are presenting the science of how one can know Kṛṣṇa, the Supreme Personality of Godhead, by practicing the teachings of the Bhagavad-gītā and the Śrīmad-Bhāgavatam. They teach us that our only business is to love God. Our business is not to ask God for our necessities. God gives necessities to everyone—even to one who has no religion. For example, cats and dogs have no religion, yet Kṛṣṇa supplies them with the necessities of life. So why should we bother Kṛṣṇa for our daily bread? He is already supplying it. Real religion means to learn how to love Him.

**Ms. Nixon:** Do all paths lead to the



same end?

**Śrīla Prabhupāda:** No. There are four classes of men—the karmīs, the jñānīs, the yogīs, and the bhaktas—and each achieves a different goal. The karmīs work for some material profit. For example, in the city, many people work hard day and night, and their purpose is to get some money. Thus, they are fruitive workers, or karmīs. A jñānī is a person who thinks, "Why am I working so hard? The birds, bees, elephants, and other creatures have no profession, yet they are also eating. So why should I unnecessarily work so hard? Rather, let me try to solve the problems of life—birth, death, old age, and disease." Jñānīs try to become immortal. They think that if they merge into God's existence, then they will become immune to birth, death, old age, and disease. And yogīs try to acquire some mystic power to exhibit a wonderful show. For instance, a yogī can become very small: if you put him into a locked room, he can come out through any little space. By showing this kind of magic, the yogī is immediately accepted as a very wonderful man. Of course, modern yogīs simply show some gymnastics—they have no real power. But a real yogī has some power, which is not spiritual but material. So the yogī wants mystic power, the jñānī wants salvation from the miseries of life, and the karmī wants material profit.

But the bhakta—the devotee—doesn't want anything for himself. He simply wants to serve God out of love, just as a mother serves her child. There is no question of profit in a mother's service to her child. Out of pure affection and love, she cares for him.

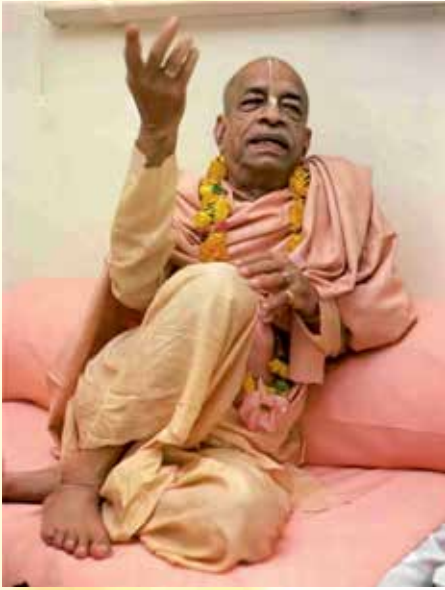
When you come to this stage of loving God, that is perfection. Neither the karmī, the jñānī, nor the yogī can know God—only the bhakta. As Kṛṣṇa says in the Bhagavad-gītā (18.55), bhaktyā māṃ abhijānāti: "Only through the process of bhakti can one understand God." Kṛṣṇa never says one can understand Him by other processes. No. Only through bhakti. If you are interested in knowing God and loving Him, then you must accept the devotional process. No other process will help you.

**Ms. Nixon:** Can one function better in society by becoming Kṛṣṇa conscious?

**Śrīla Prabhupāda:** Yes, you can see that my disciples are not drunkards or meat-eaters, and from a physiological point of view they are very clean—they'll never be attacked by serious diseases. Actually, giving up meat-eating is not a question of Kṛṣṇa consciousness but of civilized human life. God has given human society so many things to eat—nice fruits, vegetables, grain, and first-class milk. From milk one can prepare hundreds of nutritious foods, but no one knows the art. Instead, people maintain big slaughterhouses and eat meat. They are not even civilized. When man is uncivilized, he kills poor animals and eats them.

Civilized men know the art of preparing nutritious foods from milk. For instance, on our New Vṛndāvana farm in West Virginia, we make hundreds of first-class preparations from milk. Whenever visitors come, they are astonished that from milk such nice foods can be prepared. The blood of the cow is very nutritious, but civilized men utilize it in the form of milk. Milk is nothing but cow's blood transformed. You can make milk into so many things—yogurt, curd, ghee (clarified butter), and so on—and by combining these milk products with grains, fruits, and vegetables, you can make hundreds of preparations. This is civilized life—not directly killing an animal and eating its flesh. The innocent cow is simply eating grass given by God and





supplying milk, which you can live on. Do you think cutting the cow's throat and eating its flesh is civilized?

**Ms. Nixon:** Are you attempting to revive the ancient Indian caste system in the West? The *Gītā* mentions the caste system...

**Śrīla Prabhupāda:** Where does the Bhagavad-gītā mention the caste system? Kṛṣṇa says, *cātur-varṇyam mayā sṛṣṭam guṇa-karma-vibhāgaśaḥ*: "I created four divisions of men according to their quality and work." (Bg. 4.13) For instance, you can understand that there are engineers as well as medical practitioners in society. Do you say they belong to different castes—that one is in the engineer caste and the other is in the medical caste? No. If a man has qualified himself in medical school, you accept him as a doctor; and if another man has a degree in engineering, you accept him as an engineer. Similarly, the Bhagavad-gītā defines four classes of men in society: a class of highly intelligent men, a class of administrators, a class of productive men, and ordinary workers. These divisions are natural. For example, one class of men is very intelligent. But to actually meet the qualifications of first-class men as described in the Bhagavad-gītā, they need to be trained, just as an intelligent boy requires training in a college to become a qualified doctor. So in the Kṛṣṇa consciousness movement we are training the intelligent men how to control their minds, how to control their senses, how to become truthful, how to become clean internally and externally, how to become wise, how to apply their knowledge in practical

life, and how to become God conscious. All these boys [gestures toward seated disciples] have first-class intelligence, and now we are training them to use it properly.

We are not introducing the caste system, in which any rascal born in a brāhmaṇa family is automatically a brāhmaṇa. He may have the habits of a fifth-class man, but he is accepted as first class because of his birth in a brāhmaṇa family. We don't accept that. We recognize a man as first class who is trained as a brāhmaṇa. It doesn't matter whether he is Indian, European, or American; lowborn or highborn—it doesn't matter. Any intelligent man can be trained to adopt first-class habits. We want to stop the nonsensical idea that we are imposing the Indian caste system on our disciples. We are simply picking out men with first-class intelligence and training them how to become first class in every respect.

**Ms. Nixon:** How do you feel about women's liberation?

**Śrīla Prabhupāda:** So-called equal rights for women means that the men cheat the women. Suppose a woman and a man meet, they become lovers, they have sex, the woman becomes pregnant, and the man goes away. The woman has to take charge of the child and beg alms from the government, or else she kills the child by having an abortion. This is the woman's independence. In India, although a woman may be poverty-stricken, she stays under the care of her husband, and he takes responsibility for her. When she becomes pregnant, she is not forced to kill the child or maintain him by begging. So, which is real independence—to remain under the care of the husband or to be enjoyed by everyone?

**Ms. Nixon:** How about in spiritual life—can women also succeed in Kṛṣṇa consciousness?

**Śrīla Prabhupāda:** We make no distinction on the basis of sex. We give Kṛṣṇa consciousness to both men and women equally. We welcome women, men, the poor, the rich—everyone.

**Ms. Nixon:** Could you explain the meaning of the Hare Kṛṣṇa mantra?

**Śrīla Prabhupāda:** It is very simple. Hare means, "O energy of the Lord," and Kṛṣṇa means, "O Lord Kṛṣṇa." Just

as there are males and females in the material world, similarly, God is the original male (puruṣa), and His energy (prakṛti) is the original female. So, when we chant Hare Kṛṣṇa, we are saying, "O Lord Kṛṣṇa, O energy of Kṛṣṇa, kindly engage me in Your service."

**Ms. Nixon:** You have said that you are not God, and yet it appears to me, as an outsider, that your devotees treat you as if you were God.

**Śrīla Prabhupāda:** Yes, that is their duty. Because the spiritual master is executing God's order, he should be respected as much as God, just as a government officer should be respected as much as the government because he executes the government's order. Even if an ordinary policeman comes, you have to respect him because he is a government man. But that does not mean he is the government. *Sākṣād-dharitvena samasta-śāstrair/uktas tathā bhāvya eva sadbhiḥ*: \*\* "The spiritual master is to be honored as much as the Supreme Lord because he is the most confidential servitor of the Lord. This is acknowledged in all revealed scriptures and followed by all authorities."

**Ms. Nixon:** One of the most difficult aspects of Kṛṣṇa consciousness for an outsider to accept is the Deity in the temple—how it represents Kṛṣṇa. Could you talk a little bit about that?

**Śrīla Prabhupāda:** Yes. At the present moment, because you have not been trained to see Kṛṣṇa, He kindly appears before you so you can see Him. You can see wood and stone, but you cannot see what is spiritual. Suppose your father is in the hospital, and he dies. You are crying by his bedside, "Now my father is gone!" But why do you say he is gone? What is that thing which is gone?

**Ms. Nixon:** Well, his spirit is gone.

**Śrīla Prabhupāda:** And have you seen that spirit?

**Ms. Nixon:** No.

**Śrīla Prabhupāda:** So you cannot see spirit, and God is the Supreme Spirit. Actually, He is everything—spirit and matter—but you cannot see Him in His spiritual identity. Therefore, to show kindness toward you, He appears out of His unbounded mercy in the form of a wooden or stone Deity so that you can see Him.



## Upcoming events:

### **Jhulan Yatra (18th August to 22nd August)**

The rainy season is punctuated with gentle breeze, greenery all around and a fresh and earthy aroma that fills the atmosphere. In remembrance of the Lord's pastimes performed during this time of the year, the annual Jhulan Yatra is organised. Their Lordships are seated on a swing and devotees pull the string, making them go to and fro to enjoy the showers and gentle breeze. The swing gives an opportunity to serve the divine couple and participate in their transcendental pastimes. Devotees do not miss any opportunity of offering service to the Lord. Due to the ongoing pandemic, this festival will be celebrated following all protocols.

### **Disappearance day of Srila Rupa Goswami (19th August)**

Srila Rupa Goswami was instructed by Chaitanya Mahaprabhu Himself. He is one of the six Goswamis of Vrindavana, who became the primary instructors in the philosophy of Vaishnavism. From being a wealthy government official to a mendicant, the life history of Srila Rupa Goswami is an archetype of how a devotee must live. Establishing and explicating principles of Vaishnavism, through his vast literature, Srila Rupa Goswami became the torch bearer of the Gaudiya Sampradaya, under the direct guidance of Lord Chaitanya, who is non-different from Krishna.

The followers of Krishna consciousness are also known as 'Rupanugas' or the 'followers of Rupa Goswami'. This elaborates on his position in the Vaishnava sampradaya. His instructions are the life and soul of those desirous of attaining love of Godhead. On his disappearance day, devotees will pray for his favour and mercy, which can catapult them on their path of bhakti. The celebrations will include pushpanjali, kirtan, and glorification. Devotees will revisit the teachings of this great acharya.

### **Appearance of Lord Balarama (22nd August)**

Lord Balarama is the first expansion of the Lord. He is the Adi-Guru, the eternal spiritual master. He is the one whose mercy can take us closer to our goal of perfecting our human birth. The mercy of Lord Balarama is imperative to progress on the spiritual path. The appearance of Lord Balarama will be celebrated with abhishek, resounding kirtan and feasting on Ekadashi prasadam. Various pastimes of the Lord will be narrated and heard. Devotees will observe a fast to spend more time remembering the lilas of the Lord. This will cement their resolution to remain determined and enthusiastic on the path of devotional service.

### **Second month of Chaturmasya begins (22nd August)**

The second month of Chaturmasya will begin from 23rd August. Devotees will give up the consumption of curd/ yogurt.



## आगामी कार्यक्रम

### **झूलन यात्रा (18 अगस्त से 22 अगस्त)**

बरसात का मौसम सुकोमल बयार, चारों ओर हरियाली और ताजा मिट्टी की सौंधी सुगंध से युक्त वातावरण को भर देने वाला होता है। भगवान् द्वारा की गई लीलाओं के स्मरण में वर्ष के इस मौसम में, वार्षिक झूलन यात्रा का आयोजन किया जाता है। परम भगवान् एक झूले पर विराजमान हैं और भक्त जन डोरी खींचते हैं, जिससे कि वे बारिश और कोमल हवा का आनंद लेने हेतु इधर-उधर झूलते हैं। झूला दिव्य युगल की सेवा करने और उनकी दिव्य लीलाओं में भाग लेने का अवसर प्रदान करता है। भक्त भगवान की सेवा करने का कोई भी अवसर नहीं छोड़ते हैं। सुचारु महामारी के चलते सभी प्रोटोकॉल का पालन करते हुए यह पर्व मनाया जाएगा।

### **श्रील रूप गोस्वामी का तिरोभाव दिवस (19 अगस्त)**

श्रील रूप गोस्वामी को स्वयं चैतन्य महाप्रभु ने निर्देश दिया था। वह वृंदावन के छह गोस्वामीयों में से एक हैं, जो वैष्णववाद के दर्शन में प्रथम प्रचारक बने। एक धनी सरकारी अधिकारी से एक भिक्षुक तक, श्रील रूप गोस्वामी का जीवन इतिहास इस बात का एक आदर्श है कि एक भक्त को कैसे जीवन जीना चाहिए। श्रील रूप गोस्वामी, भगवान् चैतन्य, जो कृष्ण से अलग नहीं हैं के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन में, अपने विशाल साहित्य के माध्यम से, वैष्णववाद के सिद्धांतों की स्थापना एवं व्याख्या कर गौड़ीय संप्रदाय के मशाल वाहक बने।

कृष्णभावनामृत के अनुयायियों को 'रूपानुग' या 'रूप गोस्वामी के अनुयायी' के रूप में भी जाना जाता है। यह वैष्णव संप्रदाय में उनकी स्थिति पर विस्तारित दृष्टि प्रदान करता है। उनके निर्देश भगवद्प्रेम प्राप्ति के इच्छुक भक्तों के जीवन और प्राण हैं। उनके तिरोभाव दिवस के दिन, भक्तगण उनकी कृपा और दया की याचना हेतु प्रार्थना करेंगे, जो भक्तों को उनके भक्ति मार्ग पर आगे ले जा सके। समारोह में पुष्पांजलि, कीर्तन और उनका महिमामंडन भी शामिल रहेगा। भक्तगण इन महान् आचार्य की शिक्षाओं का पुनः स्मरण करेंगे।

### **भगवान् बलराम का प्राकट्य (22 अगस्त)**

भगवान् बलराम परम भगवान् के प्रथम विस्तार हैं। वह आदि-गुरु एवं शाश्वत आध्यात्मिक गुरु हैं। वे वह हैं जिसकी कृपा हमें हमारे मानव जन्म को पूर्ण करने के लक्ष्य के समीप ले जा सकती है। आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ने के लिए भगवान् बलराम की कृपा अनिवार्य है। लगातार अभिषेक,



### 🌳 Janmashtami (30th August)

The Lord appears to reciprocate with His devotees. These reciprocations form the content of Vedic scriptures which inspire and guide the living entities who choose to take to devotional service. The Lord's appearance and His pastimes are neither ordinary nor ceasing. The eternal exchange of love between the Lord and His devotees is what constitutes the vast Vedic literature, the foundation of spiritual life. The festival of Janmashtami celebrates the auspicious appearance of Lord Krishna. His appearance irrespective of time and place, invokes auspiciousness and good fortune for all. The transcendental appearance of the Lord will be celebrated with a week-long Krishna katha and Shobha yatra marking the inauguration of the ceremony. An elaborate abhishek and non-stop kirtan will welcome the thousands who come to take the resplendent darshans of the Lord. Devotees fast, chant and beg for the Lord's mercy which is the only hope of a fallen entity.



### 🌳 Appearance day of Srila Prabhupada (31st August)

Exalted Vaishnavas appear to guide and direct human civilization towards the light of Krishna consciousness. The world acknowledges the prominent role played by Srila Prabhupada, in the spread and propagation of the Vaishnava philosophy. One of the greatest saints of Modern Era, A.C Bhaktivedanta Swami Prabhupada, is not just the Founder Acharya of ISKCON, but is also a figure synonymous with the glorious culture and spiritual tradition of India.

ISKCON will celebrate the 125th birth anniversary of its beloved Prabhupada. As an organisation having its presence all across the globe, this is an occasion demanding a befitting celebration. However, due to restrictions on public gathering amidst Covid 19 pandemic, the celebrations have been given an innovative shape and form.

The customary abhishek, kirtan and glorification will be held at the premises of Sri Sri Radha Parthasarathi Temple, East of Kailash. Devotees will gather to remember, honour and glorify the revered acharya, who performed the magical feat of transforming millions of lives in a short span of time. The government of India will release a gold coin to mark this occasion. This stands testimony to the stature of Srila Prabhupada who not only led the Vaishnava tradition to its global presence in the 20th century, but also ensured the continuation of its march of honour through path breaking literature and establishments of various kinds.



उच्च स्वर में कीर्तन और एकादशी भोज प्रसादम के साथ ही भगवान बलराम के प्राकट्य का उत्सव मनाया जाएगा। भगवान् की विभिन्न लीलाएं कही और सुनाई जाएंगी। भक्तगण भगवान की लीलाओं का स्मरण करने हेतु अधिक समय बिताने को उपवास रखेंगे। यह भक्ति सेवा के पथ पर दृढ़ और उत्साही बने रहने के उनके संकल्प को मजबूत करेगा।

### 🌳 चतुर्मास का द्वितीय मास आरम्भ (22 अगस्त)

चतुर्मास का दूसरा महीना 22 अगस्त से आरम्भ होगा। इसमें भक्त दधि/दही का सेवन छोड़ देंगे।

### 🌳 जन्माष्टमी (30 अगस्त)

भगवान अपने भक्तों के साथ आदान प्रदान करते दिखाई देते हैं। ये पारस्परिक संबंध ही वैदिक शास्त्रों की सामग्री बनते हैं जो उन जीवों को प्रेरित और मार्गदर्शित करते हैं जिन्होंने भक्ति करना चुना है। प्रभु का प्राकट्य एवं उनकी लीलाएं न तो साधारण हैं और न ही समाप्त होने वाली हैं। भगवान और उनके भक्तों के बीच प्रेम का शाश्वत आदान-प्रदान ही विशाल वैदिक साहित्य एवं आध्यात्मिक जीवन की नींव है। जन्माष्टमी का त्योहार भगवान कृष्ण के मंगल प्राकट्य के शुभ अवसर का द्योतक है। उनका प्राकट्य देश-काल की सीमाओं से परे, सभी के लिए शुभता और सौभाग्य का आह्वान करता है। समारोह के उद्घाटन के साथ ही पूरे एक सप्ताह तक चलने वाली कृष्ण कथा और शोभा यात्रा के साथ भगवान के दिव्य प्राकट्य का उत्सव मनाया जाएगा। एक विस्तृत अभिषेक और अनवरत कीर्तन उन हजारों लोगों के आगमन का साक्षी बनेगा जो भगवान के देदीप्यमान दर्शन लेने आते हैं। भक्त उपवास करते हैं, जप करते हैं और भगवान से दया की याचना करते हैं जो एक पतित जीव की एकमात्र आशा है।

### 🌳 श्रील प्रभुपाद का प्राकट्य दिवस (31 अगस्त)

श्रेष्ठ वैष्णवों का प्राकट्य मानव सभ्यता को कृष्णभावनामृत के प्रकाश की ओर निर्देशित एवं मार्गदर्शित करने हेतु होता है। वैष्णव दर्शन के प्रचार तथा प्रसार में श्रील प्रभुपाद द्वारा निभाई गई विशिष्ट भूमिका का सम्मान सारा संसार करता है। आधुनिक युग के महान संतों में से एक, श्री कृष्ण कृपा मूर्ति ए.सी. भक्तिवेदांत स्वामी श्रील प्रभुपाद, न केवल इस्कॉन के संस्थापक आचार्य हैं, बल्कि भारत की गौरवशाली संस्कृति और आध्यात्मिक परंपरा का पर्याय भी हैं। एक संगठन के रूप में इस्कॉन, जिसकी उपस्थिति पूरे विश्व में है, अपने प्रिय प्रभुपाद की 125वीं जयंती मनाएगा। यह एक बृहद उत्सव आयोजित करने वाला अवसर है। यद्यपि, कोविड 19 महामारी के मध्य सार्वजनिक सभा पर प्रतिबंध के कारण, समारोह को एक अभिनव आकार और रूप दिया गया है।

इस्कॉन ईस्ट ऑफ कैलाश, श्री श्री राधा पार्थसारथी मंदिर परिसर में प्रथागत अभिषेक, कीर्तन और महिमामंडन किया जाएगा। कम समय में लाखों लोगों के जीवन को बदलने का चमत्कारी कार्य करने वाले श्रद्धेय आचार्य का स्मरण करने, उनका सम्मान करने और उनका महिमामंडन करने के लिए भक्त एकत्रित होंगे। इस अवसर को साक्षी रूप प्रदान करने हेतु भारत सरकार एक सोने का सिक्का जारी करेगी। यह श्रील प्रभुपाद के कद का प्रमाण है, जिन्होंने न केवल २०वीं शताब्दी में वैष्णव परंपरा को अपनी वैश्विक उपस्थिति में नेतृत्व प्रदान किया, बल्कि पथ-प्रदर्शक साहित्य और विभिन्न प्रकार के प्रतिष्ठानों के माध्यम से अपने सम्मान की गति को सुचारु रखना सुनिश्चित किया।

# PREACHING CENTRES AROUND DELHI NCR

## ISKCON, EAST OF KAILASH

**Chirag Delhi**-168, Sejawal Chowpal, Near Subzi Mandi Chirag Delhi, New Delhi-110017  
Contact at: 9911717110, 9910381818, 9810484885  
Program: Every Saturday, Evening 7 PM to 9 PM

**Okhla**- Chhuria Muhalla Chowpal, Tehkhand Village Okhla, Phase – I, New Delhi-110020  
Contact at: 8588991778, 9810016516, 9911613165, 9971755934  
Program: Every Tuesday, Evening 7 PM to 9 PM

**Kotla Mubarakpur**- Shri Omkareshwar Shiv Mandir (Panghat wala), Gurudwara Road Opp. Sher Singh Bazar, Kotla Mubarakpur, New Delhi-110003  
Contact at: 9350941626, 9818767673, 9311510999  
Program: Every Saturday, Evening 7 PM to 9 PM

**Khanpur**- B-192-B, Jawahar Park, Devli Road (Near Cambridge School), Khanpur, New Delhi-110062  
Contact at: 9818700589, 9810203181, 9910636160  
Program: Every Saturday, Evening 7 PM to 9 PM

**Hari Nagar, Ashram**- 217, Saini Chaupal, Ashram Or 119, VIIT Computer Institute (Basement)  
Hari Nagar, Ashram, New Delhi-110014  
Contact at: 9811281521, 011-26348371  
Program: Every Saturday, Evening 7 PM to 9 PM

**East Vinod Nagar**- E – 322, Gali No. 8, East Vinod Nagar, Delhi-110091  
Contact at: 9810114041, 9958680942  
Program: Every Saturday, Evening 6.30 PM to 8.30 PM

**Sriniwas Puri**-Sanatan Dharam Durga Mandir 1st Floor, J J Colony near to Gurudwara, Sriniwas Puri, New Delhi-110065  
Contact at: 9711120128, 9654537632  
Program: Every Wednesday, Evening 7.30 PM to 9 PM

**Sangam Vihar**- E-6/102, Near Mahavir Vatika Sangam Vihar, New Delhi-110080,  
Contact at: 9212495394, 9810438870  
Program: Every Sunday: Evening 5 PM to 8 PM  
Every Morning: 5 AM to 7 AM (Mantra Meditation)  
Every Evening: 7 PM to 9 PM (Aarti)

**Boat Club**-Rajpath Lawn near Central Secretariat Metro Station, New Delhi -110001, Every Wednesday 1PM -2 PM  
Contact : 9560291770, 9717647134

**Panchsheel Enclave**-ISKCON DIVE, A-1/7 Panchsheel Enclave, New Delhi-110017

**Mayur Vihar**-Srivastava Angan Namahatta Center, 223-A Pkt. C ph.2 Mayur Vihar  
Every Saturday 5.30 - 7.30 PM  
Contact ~ 9971999506 & 9717647134

**Sarojini Nagar**-Bharat Sewak Samaj Nursery School, Opp. Keshav Park, Sarojini Nagar Market, New Delhi – 110023  
Every Monday 6 PM to 8 PM  
Contact : 9899694898, 9311694898

**Lodi Road**-Pocket – 2 Park, Lodhi Road Complex, New Delhi – 110003  
Every Saturday 5 PM to 7 PM  
Contact : 9868236689, 8910894795

**R.K.Puram**-DMS Park (Opp. House No. 238), Sector - 7, R.K. Puram, New Delhi –22, Every Sunday 5 PM to 7 PM  
Contact: 9899179915, 860485243, 8447151399

**Gole Market**-Model Park, Sector – 4, DIZ Area, Gole Market, New Delhi – 110001  
Every Saturday 5 PM to 7 PM  
Contact: 9560291770, 9717635883

**Sant Kanwar Ram Mandir**-6.15pm. Every MONDAY at Jal Vihar Road, Lajpat Nagar -2, New Delhi Contact- 9971397187.

**East of Kailash**-Katha - Amritam, 6.45 pm every Sunday, Venue- Prasadam Hall, ISKCON Temple, Contact: 99582 40699, 70113 26781.

**East of Kailash**-Yashoda Angan, 6.45pm every Sunday, Venue- JCC Room, Iskcon temple, East of Kailash, Contact:- 97110 06604

## ISKCON, GURUGRAM

**RADHA KRISHNA MADIR**-New Colony, Gurugram, Every Saturday-6:30 to 8:30PM  
Melodious Kirtan, Discourse on wisdom of Bhagvad Gita and Krishna Prasadam

**Rail Vihar Community Center**  
Sec 47, Gurugram, Every Wednesday 7:00 to 9:30PM, Melodious Kirtan, Discourse on wisdom of Bhagvad Gita and Krishna Prasadam

**Katwaria Sarai** - F 117, Basement, Near well No 1, Katwaria Sarai New Delhi 110016. Contact: +91 75033 48819, Youth program - Every Friday 7.30 PM. Family program - Every Saturday 7.30 PM

**Ladosarai** - F-6, Hare Krishna wali Gali, Near Panchayat Bhawan, Ladosarai, New Delhi-110030. Contact No.: 7011003974, 9888815430, 9717600814. Youth Program: Tuesday 07:30 PM; Congregation Program: Sunday- 5:00 PM

**Mehrauli** - Opposite Agarwal Dharmashala, Mehta chowk, Ward no 8, Mehrauli , New Delhi 110030.  
Contact: 9711862441, 9911399960, 9810565805.  
Congregation Program: Every Saturday, 4-6 PM;  
Youth Program: Every Sunday, 4-5PM

**Chattarpur** - Nitin Niwas H. No. 133, Chattarpur, Near Tyagi Chaupal, Near Axis Bank ATM, South Delhi, 110074,  
Contact: 9910290149  
Program: Every Sunday 5.30PM To 7.30PM

**Aya Nagar 1**- Shiv Hansa Complex, Phase VI, G Block, Bandh Road, Opp Max Gain Shopping Centre, Aya Nagar.  
Contact: 9953891845, 8860681843, Program: Every Sunday, 6 To 8 PM

**Aya Nagar 2**- Opp MCD School, Near Easy Day, Main Road, Aya Nagar, Delhi.  
Contact: 9899729858, 8368656274  
Program: Every Sunday 4 To 6 PM

**Malviya Nagar** - 90/77, Basement, Behind Malviya Hospital, Malviya Nagar.  
Contact No. 8097263066, Program: Every Saturday 6PM Onwards

**Khirk Extension** - JG-35, Near Krishna Temple, Inside Left Street, Khirk Extension.  
Contact No. +91 98911 27996  
Program: Every Sunday 5 PM Onwards

**Kishan Garh** - H.No.602, Ward No.3, Bhuiyan Chowk ,Gausala Road Kishan Garh,Vasant Kunj. Contact No- 8447358738  
Every Sunday, 3:00 PM onwards

**Sangam Vihar** - D-170, Gali no. 4, Hare Krishna Centre Barsana Dham, Nearby Sona Sweets, Sangam Vihar, New Delhi-110080.  
Contact number:- 8851286364, 8447042470, Every Saturday; 6:00 PM-8:00PM; Every Friday and Sunday; 5:30-7:00AM onwards

**East Of Kailash** - 194 FF Amritpuri Garhi, East of Kailash, Near MCD School, New Delhi-110065. Contact: 9811347826, 9990503548.  
Youth Program:- Saturday 7:00 PM

**Ber Sarai** - House number -2, Near Government Dispensary, BerSarai, New Delhi, Contact - 8882347935, 7065835531  
Youth Program : Monday 7:00PM, Congregation Program : Saturday 4:00PM

**Vasant Kunj** - B100 (Basement), B Block, Mother Dairy, Vasant Kunj Enclave, New Delhi-110070. Contact No.: 8860246574, 8879005088.  
Every Sunday- 04:00 PM

**Saket** - C-109, Ground Floor, Near Mother Dairy, Paryavaran Complex, Saket, New Delhi-110030, Contact: 8287713680, 8130505488, 9667427986  
Youth Program: Saturday 07:00 PM; Congregation Program: Friday 07:00 PM

**Tigri Extension** - C-10 Hare Krishna Centre, Maha Shiv Shakti Mandir, Tigri Extension, New Delhi-110080. Contact: 8851286364, 9810433117  
Every Sunday, 11:00am - 1:00PM

**Ghitorni** - House no. 270, Balmiki choupal, Near Kali Mata Mandir, Ghitorni, New Delhi-1100030, Contact No. -9975756916, 7065835531  
Youth Program- Thursday-7:00PM

**Sultanpur** - 2nd floor, Waliya house, near Gurudwara, Sultanpur, Delhi 110030. Contact-9667478077. Youth program-Sunday 7:00 PM;  
Congregation Program-Friday 5:00 PM

**Prahlad Pur** - A-132, DDA Flats, Prahladpur New Delhi 110044  
Contact: 9999464382, 9650543321, Every Sunday 04:00 PM

**Paharganj** - 1st Floor, Radha Krishna Mandir, Near Jain Mandir, Mantola, Paharganj, Contact No. 9818188182; 9810224106  
Program: Every Saturday 7:00 To 8:00 PM

# Nitya Seva

Nitya Seva-Niswartha Seva is a selfless monthly donation program for serving the Lord. It's purely voluntary, based on the desire, inclination and capability of the donor. The mode of donation could be through cash, cheque or ECS. One can choose to donate any amount as Lord Krishna sees our intent behind that donation. A formal receipt will be provided for each donation. For more details,

- Sri Sri Radha Parthasarathi Nitya Vighraha Sewa including bhoga offerings (fruits, vegetables, dry fruits, wheat flour, sugar, desi ghee, etc), deity dresses, deity jewellery and other paraphernalia, Please contact HG Janmashtami Chandra Prabhu @ 7011326781, 9999035120
- For ISKCON, East of Kailash, Please contact HG Baladeva Sakha Prabhu @ 9312069623
- For ISKCON, Punjabi Bagh, Please contact HG Premanjana Prabhu @ 9999197259.
- For ISKCON, Dwarka, Please contact HG Archit Prabhu @ 9891240059.
- For ISKCON, Gurugram, Please contact HG Narhari Prabhu @ 9034588881.
- For ISKCON, Faridabad, Please contact HG Ravi Shravan Prabhu @ 9999020059
- For ISKCON Panchsheel, Please contact HG Advaita Krishna Prabhu @ 9810630309/HG Rasraj Prabhu @ 9899922666



## International Society for Krishna Consciousness

Founder Acharya - HDG A.C. Bhaktivedanta Swami Prabhupada

ISKCON, East of Kailash - Hare Krishna Hill, East of Kailash, New Delhi-65

Web: [www.iskcondelhi.com](http://www.iskcondelhi.com) | Live Darshan: [live.iskcondelhi.com](http://live.iskcondelhi.com)

Facebook: [www.facebook.com/iskcondelhi](http://www.facebook.com/iskcondelhi), Contact: 011-41625804, 26235133

**ISKCON, Punjabi Bagh** - 41/77, Srila Prabhupada marg,  
West Punjabi Bagh, Delhi-26  
Contact Person: HG Premanjana Prabhu (8802212763)

**ISKCON, Dwarka** - Plot No.-4, Sector-13, Dwarka, New Delhi-110075  
Web: [iskcondwarka.org](http://iskcondwarka.org), Facebook: [www.facebook.com/iskcon.dwarka/](http://www.facebook.com/iskcon.dwarka/)  
Contact: 9891240059, 8800223226

**ISKCON, Gurugram** - Sudarshan Dham, Main Sohna Road,  
Badshahpur, Gurugram  
Contact Person: HG Narhari Prabhu : 9034588881

**ISKCON, Faridabad** - Sri Sri Radha Govind Mandir, Gita Bhawan,  
C-Block, Ashoka Enclave-II, Sector-37, Faridabad,  
Phone : 0129-4145231  
Email : [gopisvardas@gmail.com](mailto:gopisvardas@gmail.com)

**ISKCON, Bahadurgarh** - Nahara-Nahari Road, Line Par Bahadurgarh,  
Haryana - 124507, Phone: +91-9250128799  
Email: [info@iskconbahadurgarh.com](mailto:info@iskconbahadurgarh.com)

**ISKCON, Rohini** - Plot No-3, Institutional Area, Main Road,  
Sector-25, Rohini New Delhi 110085  
Phone: +91-9871276969  
Email: [iskcon.rohini@gmail.com](mailto:iskcon.rohini@gmail.com)

**ISKCON Gurugram (Badshahpur)** - Sudarshan Dham,  
Gurgaon-Sohna Road, Badshahpur,  
Gurgaon (2.5kms from Vatika Business park), Gurugram, Haryana 122001  
Phone: +91-9250128799, Email: [info@iskconbahadurgarh.com](mailto:info@iskconbahadurgarh.com)

**ISKCON Ghaziabad** - 11, ISKCON CHOWK R, 35, Hare Krishna Marg,  
Block 11, Raj Nagar, Ghaziabad, Uttar Pradesh 201002  
Phone: 081309 92863, Email: [iskcon.ghaziabad@pamho.net](mailto:iskcon.ghaziabad@pamho.net)

**ISKCON Chhattarpur** - Village Near Shani Dham Mandir, Asola,  
Fatehpur Beri, New Delhi, Delhi 110074  
Phone: 099537 40668

**ISKCON Gurugram** - ISKCON, Plot No 0, Near Delhi Public School,  
Sector-45, Gurugram, Haryana-122003  
Phone: 09313905803, 08920451444, 09810070342  
Email: [iskcongurugram.sec45@gmail.com](mailto:iskcongurugram.sec45@gmail.com)

**Sri Sri Radha-Vallabh Temple** - 2439, Chhipiwara, Chah Rahat,  
Jama Masjid Rd, Old Delhi, Delhi-110006  
Phone: 098112 72600

**Sri Sri Radha Govind Dev Temple** - Opposite NTPC Office, A-5,  
Maharaja Agrasen Marg, Block A, Sector 33, Noida, Uttar  
Pradesh-201301  
Phone: 095604 76959